सूर्योदय-स्वस्थ बचपन

मासिक न्यूज़लेटर अप्रैल 2026 अंक-4

अपर मुख्य सचिव की कलम से...

नवजात शिशु के जीवन के प्रारंभिक 1000 दिन-अर्थात गर्भधारण से लेकर 30 माह तक-मानव पूंजी निर्माण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण अवधि है। वैश्विक अध्ययनों के अनुसार जीवन के पहले दो वर्षों में मस्तिष्क का लगभग 80-85% विकास हो जाता है, जबकि इसी अवधि में कुपोषण, एनीमिया एवं संक्रमण जैसी स्थितियाँ बच्चे के दीर्घकालिक शारीरिक एवं संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित कर सकती हैं। भारत में अभी भी बच्चों में स्टंटिंग, वेस्टिंग तथा कम जन्म वजन (Low Birth Weight) की चुनौतियाँ मौजूद हैं, जिनका समाधान इस संवेदनशील अवधि में समुचित हस्तक्षेप द्वारा संभव है।

राज्य में RMNCAH+N रणनीति के माध्यम से 'कॉन्टिन्यूअम ऑफ केयर' दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसके तहत गर्भावस्था के दौरान न्यूनतम 4 एएनसी जाँच, संस्थागत प्रसव, जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान की शुरुआत, पहले 6 माह तक विशुद्ध स्तनपान तथा समय पर पूरक आहार सुनिश्चित किया जा रहा है। साथ ही, सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम, होम बेस्ड न्यूबॉर्न केयर (HBNC) एवं होम बेस्ड यंग चाइल्ड केयर (HBYC) के माध्यम से समुदाय स्तर पर सतत निगरानी की जा रही है।

एनीमिया मुक्त भारत अभियान, पोषण अभियानों तथा माइक्रोन्यूट्रिएंट सप्लीमेंटेशन के जरिए मातृ एवं शिशु पोषण को सुदृढ़ किया जा रहा है। आशा, एएनएम एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की समन्वित भूमिका इस पूरी प्रक्रिया की आधारशिला है।

आवश्यक है कि सभी हितधारक इस महत्वपूर्ण अवधि में साक्ष्य-आधारित हस्तक्षेपों को प्राथमिकता दें, ताकि प्रत्येक बच्चे को स्वस्थ, सक्षम एवं उत्पादक जीवन की मजबूत शुरुआत मिल सके।

अमित कुमार घोष (आई.ए.एस.)
अपर मुख्य सचिव,
चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा चिकित्सा शिक्षा,
उत्तर प्रदेश शासन

मिशन निदेशक की कलम से...

नवजात शिशु के जीवन के प्रारंभिक 1000 दिन-अर्थात "गर्भधारण से लेकर 2 वर्ष की आयु तक का समय"-मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। यह वह स्वर्णिम अवधि है जिसमें बच्चे के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास की मजबूत नींव रखी जाती है। इस दौरान दिया गया सही पोषण, उचित देखभाल और सुरक्षित वातावरण, उसके संपूर्ण जीवन की गुणवत्ता को निर्धारित करता है। इस अवधि में बच्चे को पर्याप्त पोषण, समय पर टीकाकरण और स्नेहपूर्ण वातावरण मिलता है, तो वह न केवल स्वस्थ बल्कि बुद्धिमान एवं आत्मविश्वासी नागरिक बनता है। इसके विपरीत, इस समय में पोषण की कमी या देखभाल में लापरवाही का प्रभाव जीवनभर बना रह सकता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश के अंतर्गत मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाने हेतु अनेक योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। जननी सुरक्षा योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान, होम बेस्ड न्यूबॉर्न केयर (HBNC), एवं नियमित टीकाकरण कार्यक्रम जैसे प्रयासों के माध्यम से हम यह सुनिश्चित करने का सतत प्रयास कर रहे हैं कि प्रत्येक गर्भवती महिला एवं नवजात शिशु को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ सुलभ हों। इसके अतिरिक्त महिला, बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग द्वारा भी गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओं के लिए पोषण 2.0 सक्षम आंगनवाड़ी एवं पोषाहार योजनाओं के माध्यम से पोषण से सम्बन्धित विशेष योगदान दिये जा रहे हैं।

मैं सभी स्वास्थ्यकर्मियों, आशा, एएनएम एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं से विशेष अनुरोध करती हूँ कि वे इस महत्वपूर्ण अवधि के प्रति जागरूकता बढ़ाने में अपनी एक संयुक्त टीम बनाकर सक्रिय भूमिका निभाएँ। साथ ही, अभिभावकों को भी यह समझना होगा कि बच्चे के प्रारंभिक 1000 दिन केवल उसकी नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के भविष्य की नींव हैं।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि प्रत्येक बच्चे को जीवन के इन अमूल्य 1000 दिनों में सर्वोत्तम पोषण, देखभाल और स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करें, ताकि एक स्वस्थ, सशक्त और समृद्ध उत्तर प्रदेश का निर्माण हो सके।

"स्वस्थ शिशु, सशक्त भविष्य"

डॉ. पिंकी जोवल (आई.ए.एस.)
मिशन निदेशक,
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश

नवजात शिशु के प्रारंभिक 1000 दिन और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन की भूमिका

मानव जीवन के सबसे महत्वपूर्ण चरणों में से एक है, नवजात शिशु के प्रारंभिक 1000 दिन। यह अवधि गर्भधारण से लेकर बच्चे के दो वर्ष तक की होती है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास की नींव रखी जाती है। भारत सरकार ने इस महत्वपूर्ण समय को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के तहत कई योजनाएँ और कार्यक्रम शुरू किए हैं, जो माँ और बच्चे दोनों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए कार्य करते हैं।

प्रारंभिक 1000 दिन क्या होते हैं?

प्रारंभिक 1000 दिन में बच्चे का मस्तिष्क तेजी से विकसित होता है और उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी इसी समय बनती है। इस अवधि में पोषण की कमी, बीमारी या देखभाल की कमी का प्रभाव पूरे जीवन पर पड़ सकता है। इसलिए यह समय जीवन की नींव माना जाता है। इस अवधि में पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आयरन और कैल्शियम सप्लीमेंट, एनीमिया मुक्त भारत अभियान, विटामिन A तथा डी-वर्मिंग जैसे प्रयास बच्चों के समुचित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सही पोषण से बच्चे की ऊंचाई, वजन और मस्तिष्क विकास बेहतर होता है।

NHM और 1000 दिन का संबंध

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) भारत सरकार का एक व्यापक स्वास्थ्य कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य मातृ और शिशु मृत्यु दर को कम करना और सभी को किफायती और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। इसके अंतर्गत RMNCAH+N (Reproductive, Maternal, Newborn, Child, Adolescent Health and Nutrition) रणनीति लागू की गई है, जो गर्भावस्था से लेकर बच्चे के विकास तक निरंतर देखभाल सुनिश्चित करती है। यह रणनीति "Continuum of Care" पर आधारित है, यानी माँ और बच्चे की देखभाल गर्भावस्था से लेकर बचपन तक एक सतत प्रक्रिया के रूप में की जाती है।

गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं के लिए प्रमुख योजनाएँ और कार्यक्रम

चरण	योजना/कार्यक्रम का नाम	मुख्य विशेषताएँ
गर्भावस्था के दौरान	प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान (PMSMA)	प्रत्येक माह 4 बार गर्भावस्था की नि:शुल्क जांच, हाई-रिस्क प्रेग्नेंसी की पहचान
	जननी सुरक्षा योजना (JSY)	संस्थागत प्रसव के लिए आर्थिक सहायता, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर कम करने में सहायक
जन्म के समय एवं तुरंत बाद	जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (JSSK)	नि:शुल्क डिलीवरी, दवाइयाँ, जांच और ट्रांसपोर्ट; नवजात शिशु के लिए भी नि:शुल्क इलाज
	नवजात शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (NSSK)	जन्म के तुरंत बाद देखभाल, सांस, तापमान पर निगरानी और संक्रमण नियंत्रण
	संस्थागत नवजात देखभाल (SNCU/NBSU/NBCC)	गंभीर नवजातों के लिए विशेष उपचार और निगरानी
जन्म के बाद (0–6 माह)	स्तनपान प्रोत्साहन (MAA Program)	माँ का दूध ही शिशु को सबसे बेहतर पोषण प्रदान करता है और उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि करता है।
	टीकाकरण कार्यक्रम (UIP)	शिशु को कई गंभीर बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करता है, एनएचएम के तहत व्यापक रूप से लागू
	होम बेस्ड न्यूबॉर्न केयर (HBNC)	आशा द्वारा घर-घर जाकर नवजात शिशु की देखभाल
6 माह से 2 वर्ष तक	पूरक आहार एवं पोषण	आंगनवाड़ी के माध्यम से पोषण, कुपोषण की रोकथाम
	होम बेस्ड यंग चाइल्ड केयर (HBYC)	3 से 15 माह तक नियमित निगरानी और माता-पिता को उचित परामर्श देना
	राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK)	जन्मजात बीमारियों और विकास में देरी की पहचान एवं नि:शुल्क उपचार

इसके अतिरिक्त एनीमिया से बचाव के लिए AMB (एनीमिया मुक्त भारत), डायरिया से बचाव के लिए स्टाप डायरिया कैम्पेन, निमोनिया के बचाव एवं उपचार के लिए SAANS, तथा पेट के कीड़ों से सुरक्षा के लिए NDD (नेशनल डिवार्मिंग डे) जैसी योजनाएं भी संचालित हैं।

ये योजनाएँ एवं कार्यक्रम सुनिश्चित करते हैं कि गर्भावस्था के दौरान हर एक माँ को गुणवत्तापरक स्वास्थ्य सेवाएँ मिले, ताकि गर्भस्थ शिशु को जन्म से पहले ही बेहतर स्वास्थ्य मिल सके। इसके अतिरिक्त, NHM के अंतर्गत कई सामुदायिक स्तर की सेवाएँ भी उपलब्ध कराई जाती हैं, जैसे आशा और एएनएम द्वारा घर-घर सेवाएँ, नि:शुल्क दवा और जांच, 108/102 एम्बुलेंस सेवा तथा आयुष्मान आरोग्य मंदिरों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि हर माँ और बच्चे तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच आसान हो।

NHM की भूमिका

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन केवल एक योजना नहीं, बल्कि एक व्यापक मिशन है, जो मातृ मृत्यु दर (MMR) और शिशु मृत्यु दर (IMR) को कम करने, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने और विशेष रूप से ग्रामीण एवं वंचित क्षेत्रों तक सेवाएँ पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रारंभिक 1000 दिन बच्चे के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। इस अवधि में सही पोषण, देखभाल और स्वास्थ्य सेवाएँ मिलने से एक स्वस्थ और सक्षम नागरिक का निर्माण होता है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन इस दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान करता है। NHM के अंतर्गत चल रही योजनाएँ - जैसे JSY, JSSK, RBSK, HBNC आदि माँ और बच्चे दोनों की सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करती हैं। अंततः यह कहा जा सकता है कि यदि नवजात शिशु के प्रारम्भिक 1000 दिनों का सही उपयोग किया जाए, तो बच्चे का भविष्य स्वस्थ और सुरक्षित बन सकता है।

नवजात शिशु के प्रारंभिक 1000 दिन: जीवन की मजबूत नींव

मानव जीवन की शुरुआत जितनी कोमल होती है, उतनी ही महत्वपूर्ण भी। एक शिशु के जन्म से लेकर उसके लगभग दो वर्ष की आयु तक का समय, यानी शुरुआती 1000 दिन उसके संपूर्ण जीवन की दिशा तय करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अवधि केवल शारीरिक विकास तक सीमित नहीं होती, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास की भी मजबूत नींव रखती है।

प्रारंभिक 1000 दिन क्या हैं और क्यों महत्वपूर्ण हैं

प्रारंभिक 1000 दिन में गर्भावस्था के लगभग 270 दिन और जन्म के बाद के पहले 2 वर्ष शामिल होते हैं। यह वह समय होता है जब बच्चे का मस्तिष्क सबसे तेजी से विकसित होता है। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार, जीवन के पहले दो वर्षों में मस्तिष्क का लगभग 80-85 प्रतिशत विकास हो जाता है। इसलिए इस अवधि में की गई देखभाल बच्चे के पूरे जीवन पर असर डालती है।

गर्भावस्था के दौरान देखभाल और पोषण

शिशु के स्वस्थ विकास की शुरुआत माँ के गर्भ से ही होती है। गर्भावस्था के दौरान संतुलित आहार, नियमित स्वास्थ्य जांच, मानसिक शांति और स्वच्छ जीवनशैली अत्यंत आवश्यक हैं। इस समय आयरन, कैल्शियम, प्रोटीन और फोलिक एसिड जैसे पोषक तत्वों की पर्याप्त मात्रा सुनिश्चित करना जरूरी होता है, क्योंकि माँ का पोषण सीधे शिशु के विकास को प्रभावित करता है।

जन्म के बाद पहला वर्ष और स्तनपान का महत्व

जन्म के बाद का पहला वर्ष शिशु के तेजी से विकास का समय होता है। इस दौरान बच्चे का वजन तेजी से बढ़ता है, वह बैठना और घुटनों के बल चलना सीखता है और उसकी इंद्रियाँ (देखना, सुनना, महसूस करना) विकसित होती हैं। इस समय माँ का दूध बच्चे के लिए अमृत के समान होता है। जन्म के पहले 6 महीने तक केवल स्तनपान की सलाह दी जाती है, जो बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है और उसे कई बीमारियों से बचाता है।

ऊपरी आहार और कुपोषण से बचाव

छह महीने के बाद बच्चे को ऊपरी आहार देना शुरू किया जाता है, जिसमें दाल, चावल, फल और सब्जियाँ शामिल होनी चाहिए। इस अवधि में सही पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि कुपोषण बच्चे के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित कर सकता है। इसलिए माता-पिता को संतुलित और समय पर आहार देने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

मस्तिष्क का विकास और सीखने की प्रक्रिया

इस अवधि में बच्चे का मस्तिष्क स्पंज की तरह होता है, जो कुछ भी वह देखता, सुनता और अनुभव करता है, उसे तेजी से सीखता है। माता-पिता का प्यार, संवाद और स्पर्श उसके मानसिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बच्चे से बात करना, उसे कहानियाँ सुनाना और खेल-खेल में सिखाना उसके बौद्धिक विकास को बढ़ाता है और उसे सीखने के लिए प्रेरित करता है।

भावनात्मक और सामाजिक विकास

शिशु का पहला रिश्ता उसकी माँ और अपने परिवार से बनता है। यदि उसे प्यार, सुरक्षा और ध्यान मिलता है, तो उसमें आत्मविश्वास और सकारात्मक व्यवहार विकसित होता है। माता-पिता का व्यवहार बच्चे के व्यक्तित्व पर गहरा असर डालता है। घर का शांत और प्रेमपूर्ण वातावरण बच्चे के संतुलित और खुशमिजाज व्यक्तित्व के निर्माण में मदद करता है।

स्वास्थ्य, स्वच्छता और टीकाकरण

शिशु को बीमारियों से बचाने के लिए समय पर टीकाकरण बहुत जरूरी है। भारत सरकार द्वारा संचालित टीकाकरण कार्यक्रम के तहत कई गंभीर बीमारियों से बचाव के लिए नि:शुल्क टीके लगाए जाते हैं। इसके साथ ही साफ-सफाई, डॉक्टर से नियमित स्वास्थ्य जांच और बीमारी के लक्षणों पर समय रहते ध्यान देना भी जरूरी है।

माता-पिता की भूमिका और जिम्मेदारी

प्रारंभिक 1000 दिनों में माता-पिता की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। बच्चे के साथ समय बिताना, उसकी जरूरतों को समझना और उसे सुरक्षित एवं स्नेहपूर्ण वातावरण देना उसके समग्र विकास के लिए आवश्यक है। इस समय केवल बच्चे का विकास ही नहीं, बल्कि माता-पिता और बच्चे के बीच गहरे भावनात्मक संबंध भी मजबूत होते है।

सामान्य गलतियाँ और सावधानियाँ

जानकारी के अभाव में कई बार माता-पिता कुछ सामान्य गलतियाँ कर बैठते हैं, जैसे बहुत जल्दी ठोस आहार शुरू करना, छोटे बच्चे को मोबाइल या टीवी के संपर्क में लाना या उसकी जरूरतों पर पर्याप्त ध्यान न देना। इनसे बचना चाहिए और आवश्यकता होने पर विशेषज्ञ की सलाह लेना बेहतर होता है।

प्रारंभिक 1000 दिन जीवन की वह महत्वपूर्ण अवधि है, जो बच्चे के भविष्य की मजबूत नींव रखती है। इस दौरान सही पोषण, देखभाल, प्यार और सुरक्षित वातावरण देकर हम एक स्वस्थ, सक्षम और सशक्त पीढ़ी का निर्माण कर सकते हैं। अंततः यह कहना गलत नहीं होगा कि एक बच्चे के पहले 1000 दिन केवल उसके लिए ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार के लिए निवेश के समान हैं। जितना ध्यान और संसाधन इस समय में लगाए जाएंगे, उसका लाभ पूरे जीवन भर मिलता रहेगा। इसलिए, हर माता-पिता को चाहिए कि वे इन शुरुआती 1000 दिनों को समझें और पूरी जिम्मेदारी के साथ अपने बच्चे के उज्ज्वल भविष्य की नींव रखें।

डॉ. आनंद कुमार अग्रवाल
उप महाप्रबंधक, चाइल्ड हेल्थ,
एनएचएम, उत्तर प्रदेश

संशोधित राष्ट्रीय टीकाकरण शेड्यूल

FOR CHILDREN

Age	Vaccines given
Birth	BCG, OPV-0, Hepatitis B Birth dose
6 Weeks	OPV-1, Pentavalent-1, fIPV-1,Rota-1 & PCV-1
10 Weeks	OPV-2, Pentavalent-2 & Rota-2
14 Weeks	OPV-3, Pentavalent-3, fIPV-2, Rota-3 & PCV-2
9-12 Months	MR-1, fIPV-3, PCV-B, JE-1*, Vitamin- A-1st dose
16-24 Months	MR-2, JE-2*, DPT-B, OPV- B, Vitamin- A (2nd to 9thdose) one dose every 6 month up to 5 years
5-6 Years	DPT-B2
10 Years	Td
14 Years	HPV***
16 Years	Td

FOR PREGNANT WOMEN

STAGE	VACCINES GIVEN
	Td 1, 2 or Td Booster**

***JE Vaccine in 42 districts-**Allahabad, Ambedkarnagar, Amethi, Azamgarh, Bahraich, Ballia, Balrampur, Barabanki, Bareilly, Basti, Deoria, Faizabad, Fatehpur, Ghazipur, Gonda, Gorakhpur, Hardoi, Jaunpur, Kanpur Dehat, Kanpur Nagar, Kushinagar, Lakhimpur Kheri, Lucknow, Maharajganj, Mau, Muzaffar Nagar, Pilibhit, Pratapgarh, Raebareli, Saharanpur, Sant Kabir Nagar, Shahjahanpur, Shamali, Shrawasti, Siddharth Nagar, Sitapur, Sultanpur, Unnao, Rampur, Badaun, Chitrakoot & Jalaun.

***One dose if previously vaccinated within 3 years.*

**** Girls aged 14 years (who have completed their 14th birthday but have not yet completed their 15th birthday).*

आशा के समर्पित प्रयासों से कुपोषित बच्चे को मिला नया जीवन

भदोही जनपद के ज्ञानपुर ब्लॉक के राम का पुरा गांव में आशा कार्यकत्री शांति देवी के सतत प्रयासों से एक गंभीर रूप से कुपोषित बच्चे के स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार हुआ। यह सफलता होम बेस्ड यंग चाइल्ड केयर (HBYC) कार्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन तथा RBSK एवं NRC सेवाओं के बेहतर समन्वय का परिणाम है। राहुल और रिंकू का पुत्र रुद्रांश, 1 जनवरी 2025 को जन्म के समय ही कम वजन का था। आशा शांति देवी ने निर्धारित 6 एवं 9 माह की विज़िट के दौरान परिवार को शिशु के उचित पोषण एवं देखभाल के संबंध में नियमित रूप से परामर्श दिया, किन्तु परिवार द्वारा इन सुझावों का समुचित पालन नहीं किया जा सका। परिणामस्वरूप, बच्चा धीरे-धीरे गंभीर कुपोषण का शिकार हो गया और बार-बार बीमार रहने लगा।

NRC में रुद्रांश का परिवार

12 माह की निर्धारित विज़िट के दौरान आशा ने पाया कि बच्चे का वजन मात्र 5.6 किलोग्राम है तथा उसे पर्याप्त ऊपरी आहार नहीं मिल रहा है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए उन्होंने परिवार को पोषण, स्वच्छता एवं देखभाल के महत्व के प्रति बार-बार जागरूक किया। साथ ही, आंगनवाड़ी कार्यकत्री के सहयोग से बच्चे को न्यूट्रिशन रिहैबिलिटेशन सेंटर (NRC) में भर्ती कराने का प्रयास किया। प्रारंभ में परिवार आर्थिक कारणों से उपचार हेतु तैयार नहीं हुआ, किन्तु आशा कार्यकत्री ने निरंतर प्रयास जारी रखे। बच्चे की अत्यंत कमजोर स्थिति को देखते हुए उन्होंने तत्काल एएनएम को सूचित किया और संयुक्त रूप से बच्चे को आयुष्मान आरोग्य मंदिर के VHND सत्र में लाया गया। वहां सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा बच्चे को RBSK टीम के पास संदर्भित किया गया।

डॉ. श्रीराम के नेतृत्व में RBSK टीम ने जांच उपरांत बच्चे को महाराजा चेत सिंह जिला अस्पताल, ज्ञानपुर स्थित NRC में भर्ती करने की सलाह दी। आशा शांति देवी ने परिवार को निःशुल्क उपचार, परिवहन सुविधा एवं देखभाल से संबंधित जानकारी प्रदान कर उन्हें आश्वस्त किया तथा पूरी प्रक्रिया में सक्रिय सहयोग दिया। 10 मार्च 2026 को रुद्रांश को NRC में भर्ती किया गया, जहां उसका प्रारंभिक वजन 5.6 किलोग्राम था और वह अत्यंत कमजोर स्थिति में था। लगभग 15 दिनों तक समुचित उपचार, संतुलित पोषण एवं माता को दी गई व्यवहारिक परामर्श के परिणामस्वरूप बच्चे के स्वास्थ्य में काफी सुधार हुआ। 24 मार्च 2026 को छुट्टी के समय उसका वजन बढ़कर 6.5 किलोग्राम हो गया तथा उसकी सक्रियता में भी वृद्धि देखी गई।

आशा शांति देवी

छुट्टी के पश्चात भी आशा कार्यकत्री द्वारा नियमित गृह भ्रमण कर बच्चे की प्रगति की निगरानी की गई तथा परिवार को संतुलित एवं विविध आहार के प्रति निरंतर परामर्श दिया गया। वर्तमान में रुद्रांश स्वस्थ, सक्रिय एवं आयु अनुरूप आहार ग्रहण कर रहा है। परिवार ने आभार व्यक्त करते हुए बताया कि खराब आर्थिक स्थिति के कारण वे प्रारंभ में उपचार कराने से हिचक रहे थे, लेकिन आशा कार्यकत्री द्वारा दी गई जानकारी एवं सहयोग से उन्हें समय पर निःशुल्क उपचार प्राप्त हो सका। साथ ही, उन्हें शिशु पोषण के महत्व की भी समुचित समझ विकसित हुई।

वर्तमान में रुद्रांश अपनी माँ के साथ

यह केस स्टोरी बताती है कि यदि आशा कार्यकत्री द्वारा HBYC कार्यक्रम के अंतर्गत समय पर पहचान, सतत परामर्श एवं RBSK और NRC सेवाओं से प्रभावी तालमेल स्थापित किया जाए, तो कुपोषित बच्चों का सफल उपचार संभव है। आशा शांति देवी का समर्पण न केवल एक बच्चे के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक रहा, बल्कि पूरे परिवार को स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति जागरूक करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।